लाठी और भाला

(*आपके हाथ में क्या है?*)

***रविवार का संदेश*, 23 *अगस्त*, 2026**

आइए निम्नलिखित दो पवित्रशास्त्र के अंशों पर विचार करें:

निर्गमन 8:16

तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कह, 'अपनी लाठी बढ़ाकर भूमि की धूल पर मार, जिससे मिस्र देश भर में धूल जूँ बन जाए।'"

यहोशू 8:18

तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "अपने हाथ में जो भाला है उसे ऐ की ओर बढ़ा, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।" तब यहोशू ने अपने हाथ में जो भाला था उसे उस नगर की ओर बढ़ाया।

हम जानते हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाने के लिए मूसा को खड़ा किया था। हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मूसा के हाथ में एक लाठी का उपयोग करके सामर्थी कार्य किए।

यहोशू ने लगभग 40 वर्षों तक मूसा के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया। परमेश्वर ने यहोशू को मूसा का उत्तराधिकारी नियुक्त और अभिषिक्त किया, ताकि वह इस्राएल के लोगों को प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जाए। यहोशू की जिम्मेदारी लोगों की अगुवाई करके प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय प्राप्त करना और उस पर अधिकार करना था।

परमेश्वर ने यहोशू को मूसा के समान लाठी का उपयोग करने का निर्देश नहीं दिया।

इसके बजाय, यहोशू ने अपने हाथ में एक भाला रखा।

आइए इस पर विचार करें।

1. परमेश्वर के कार्य करने के नए तरीके और नई विधियाँ होती हैं

यदि यहोशू ऐ के विरुद्ध युद्ध में हाथ में लाठी लेकर जाता तो क्या होता? यह यहोशू के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता था—जब तक कि परमेश्वर ने उसे लाठी का उपयोग करने का निर्देश न दिया होता।

यहोशू ने केवल मूसा की "नकल" करने का प्रयास नहीं किया।

परमेश्वर अलग-अलग समयों में अलग-अलग तरीकों से कार्य करता है और विभिन्न विधियों तथा साधनों का उपयोग करता है।

वचन और अभिषेक नहीं बदलते, लेकिन परमेश्वर के वचन की सेवकाई करने और अभिषेक के अधीन सेवा करने के लिए उपयोग किए जाने वाले साधन, तरीके और विधियाँ बदल सकती हैं।

1 कुरिन्थियों 12:4–6

4 वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।

5 सेवकाइयाँ तो कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है।

6 प्रभावशाली कार्य तो कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में सब प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

कलीसिया में मीडिया का विकास

इस बात पर विचार करें कि मसीही सेवकाई में मीडिया का उपयोग किस प्रकार विकसित हुआ है—रेडियो, टेलीविजन, कैसेट टेप, सीडी, MP3, कंप्यूटर (बाइबल सॉफ्टवेयर), इंटरनेट (वेबसाइट), सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, AI टूल्स आदि से लेकर आज तक।

जब टेलीविजन आया, तो कुछ लोगों ने कहा कि यह "शैतानी" है और उन्होंने इसका विरोध किया। इसी प्रकार इंटरनेट का भी विरोध हुआ। लेकिन फिर कुछ लोगों ने इन साधनों को परमेश्वर के वचन और सेवकाई की पहुँच बढ़ाने के अवसर के रूप में देखा। और आज यही हो रहा है।

कलीसिया में संगीत का विकास

आइए विचार करें कि बाइबल और कलीसिया में आराधना किस प्रकार विकसित हुई है:

• इस्राएलियों द्वारा नृत्य के साथ गीत गाना और भविष्यद्वाणी करना (निर्गमन 15:1, 20–21)

• पुराने नियम का तम्बू, मन्दिर और वाद्ययंत्रों के साथ आराधना (गीत पुस्तकों के बिना)

• नए नियम के आराधनालय

• नए नियम की प्रारम्भिक कलीसिया की आराधना

• 700 ईस्वी — कलीसिया में ऑर्गन वाद्य संगीत

• 800 ईस्वी — ग्रेगोरियन चैंट, जिसे रोमन कैथोलिक कलीसिया के पोप ग्रेगरी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसमें याजक और मण्डली के बीच प्रश्नोत्तर शैली में गायन होता था।

• 1500 का दशक (16वीं शताब्दी) — मण्डली की सामूहिक आराधना के लिए कलीसिया के भजन (मार्टिन लूथर, जॉन कैल्विन)। कैल्विन चाहते थे कि सामूहिक आराधना में गाए जाने वाले गीतों में केवल बाइबल के शब्द हों, जबकि मार्टिन लूथर जैसे अन्य लोग चाहते थे कि कलीसिया के भजन पवित्रशास्त्र के मूल शब्दों को यथासम्भव निकटता से प्रतिबिम्बित करें।

• 1600 का दशक (17वीं शताब्दी) — योहान सेबास्टियन बाख, जर्मन संगीतकार, जिन्होंने मार्टिन लूथर को बहुत प्रभावित किया। बाख की अनेक रचनाएँ पवित्रशास्त्र के शब्दों को संगीत में सीधे व्यक्त करती हैं। बाख का साप्ताहिक कार्य होता था कि वह बाइबल के पदों का चयन करें और रविवार के लिए एक "कैंटाटा" की रचना करें तथा उसके प्रदर्शन के लिए संगीतकारों को प्रशिक्षित करें। इस प्रकार बाख संगीत की भाषा के द्वारा परमेश्वर के वचन का सामर्थी प्रचार कर रहे थे।

• जागृति के गीत — पहली महान जागृति 1740 के दशक में, दूसरी 1770 के दशक में, तीसरी महान जागृति 1850 के दशक में और अन्य जागृतियाँ।

"ओ फॉर अ थाउज़ैंड टंग्स टू सिंग" (1739/1740 के दशक)

"अमेज़िंग ग्रेस" (1772)

"रॉक ऑफ एजेज़" (1776)

"ऑल हेल द पावर ऑफ जीज़स नेम" (1779)

"देयर इज़ अ फाउंटेन फिल्ड विद ब्लड" (1772)

"व्हाट अ फ्रेंड वी हैव इन जीज़स" (1855)

"स्वीट आवर ऑफ प्रेयर" (1859)

“स्टैंड अप, स्टैंड अप फॉर जीज़स” (1858)

• 1900 का दशक — गॉस्पेल संगीत, गॉस्पेल कॉयर

• 1960–1970 का दशक — जीज़स फ्रीक्स और जीज़स मूवमेंट। पास्टर चक स्मिथ और कैल्वरी चैपल ने मसीही “रॉक” संगीत के नए रूप का स्वागत किया और उसे अपनी आराधना का हिस्सा बनाया। लैरी नॉर्मन को अक्सर मसीही रॉक संगीत का अग्रदूत माना जाता है।

• 1982 — “कॉन्टेम्परेरी क्रिश्चियन म्यूजिक” — वाइनयार्ड मूवमेंट, वाइनयार्ड म्यूजिक (जैसे “मोर लव, मोर पावर”)

• 1993 — होसाना इंटीग्रिटी, हिलसॉन्ग और अन्य मसीही बैंड

• 2000 का दशक — बेटेल म्यूजिक, जीज़स कल्चर, एलेवेशन वर्शिप, मैवरिक सिटी और कई अन्य।

समकालीन मसीही संगीत की जड़ें 1960–1970 के दशक के “जीज़स मूवमेंट” में हैं। मुख्यधारा की कलीसिया में कुछ लोगों ने “रॉक” संगीत के रूप में जाने जाने वाले वाद्ययंत्रों और संगीत शैली के उपयोग का विरोध किया। लेकिन कुछ लोगों ने कदम आगे बढ़ाया और कलीसिया को इस शैली का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया —और आज हम देखते हैं कि यह कहाँ तक पहुँच चुका है।

परमेश्वर किन नए तरीकों और नई विधियों के द्वारा आपके माध्यम से कार्य करना चाहता है, उनके लिए खुले रहें।

2. आपके हाथ में जो कुछ है, वह आपकी जिम्मेदारी के अनुरूप है

मूसा एक भविष्यद्वक्ता-अगुवा था। मूसा ने अपनी जिम्मेदारी में लाठी को एक साधन के रूप में उपयोग किया।

यहोशू एक योद्धा-अगुवा था। यहोशू ने अपनी जिम्मेदारी में भाले को एक साधन के रूप में उपयोग किया।

यहोशू को उन “रीतियों और विधियों” का उपयोग करना था जो उसके जीवन के लिए परमेश्वर की दी हुई जिम्मेदारी के अनुरूप थीं।

इफिसियों 4:7

पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।

रोमियों 12:6

इसलिए जब हमें उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, अलग-अलग वरदान मिले हैं, तो यदि भविष्यद्वाणी का वरदान मिला है तो विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करें।

परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को उसकी बुलाहट और हमारे जीवन की जिम्मेदारी के अनुरूप अनुग्रह और वरदान दिए हैं। हमारे कौशल अलग-अलग हो सकते हैं, हमारे अवसर अलग-अलग हो सकते हैं आदि।

यह पहचानें कि अभी आपके हाथ में जो कुछ है, वह आपकी जिम्मेदारी के अनुरूप है—उसका उपयोग करें!

3. जब आप कार्य करते हैं, तब परमेश्वर आपके साथ कार्य करता है

जब मूसा ने अपने हाथ में लाठी को बढ़ाया, तो उस लाठी में स्वयं कोई "अलौकिक" सामर्थ्य नहीं थी। मूसा के साथ परमेश्वर का कार्य करना ही था जिसके कारण सामर्थी कार्य हुए।

जब हम अपने हाथों को कार्य में लगाते हैं और उस चीज़ का उपयोग करते हैं जो परमेश्वर ने हमारे हाथ में रखी है, तब परमेश्वर हमारे साथ कार्य करता है। हमें परमेश्वर के सहकर्मी कहा गया है।

1 कुरिन्थियों 3:9

क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की इमारत हो।

परमेश्वर का हमारे साथ कार्य करना अनेक तरीकों से दिखाई दे सकता है—उसकी सामर्थ्य, उसके चमत्कार, उसका अनुग्रह, उसका प्रबन्ध और ऐसे ही कई अन्य तरीकों से।

जब आप कार्य करें, तो अपेक्षा रखें कि परमेश्वर का कार्य अलौकिक तरीकों से प्रकट होगा!

4. विरोध या पिछली असफलताओं को आपको रोकने न दें

यद्यपि मूसा को परमेश्वर ने बुलाया, नियुक्त किया, अभिषिक्त किया और भेजा था, और उसके हाथ में परमेश्वर की लाठी थी, फिर भी उसे विरोध का सामना करना पड़ा। फिरौन लोगों को जाने नहीं देना चाहता था। जादूगर उन पहले तीन चिन्हों की नकल करने में सक्षम थे जो मूसा ने किए थे। लेकिन मूसा अपनी जिम्मेदारी में कार्य करता रहा और उसने देखा कि परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए महान छुटकारा किया।

यहोशू और इस्राएल के लोगों को पहली बार ऐ के विरुद्ध युद्ध में हार का सामना करना पड़ा। छावनी में पाप था, और जब उन्होंने उसका समाधान कर लिया, तब वे फिर से ऐ के विरुद्ध युद्ध करने गए। यहोशू ने अपने हाथ में भाला लेकर अगुवाई की।

"तब यहोवा ने यहोशू से कहा, 'अपने हाथ में जो भाला है उसे ऐ की ओर बढ़ा, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।' तब यहोशू ने अपने हाथ में जो भाला था उसे उस नगर की ओर बढ़ाया।" (यहोशू 8:18)

इस बार उन्होंने विजय देखी।

विरोध या पिछली असफलताओं के बावजूद परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी जिम्मेदारी में आगे बढ़ते रहें।

5. आत्मा का अभिषेक ही सबसे बड़ा अन्तर उत्पन्न करता है

बाइबल बिल्कुल स्पष्ट है कि मूसा परमेश्वर के आत्मा से अभिषिक्त व्यक्ति था। इसी प्रकार यहोशू भी परमेश्वर के आत्मा से अभिषिक्त था। बात मूसा द्वारा उपयोग की गई लाठी की नहीं थी। बात यहोशू द्वारा उपयोग किए गए भाले की नहीं थी। बल्कि इन लोगों के द्वारा अपने हाथ में रखी वस्तुओं का उपयोग करके परमेश्वर की दी हुई जिम्मेदारी को पूरा करने में पवित्र आत्मा का अभिषेक उनके माध्यम से कार्य कर रहा था, और इसी ने उन्हें अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने में सक्षम बनाया।

आज हमारे लिए भी यही बात लागू होती है। हम तरीकों और विधियों पर निर्भर नहीं रहते। हम अपने हाथ में रखे साधनों पर भरोसा नहीं करते। हम पूरी तरह और केवल पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पर निर्भर रहते हैं, जो इन साधनों का उपयोग करते समय हमारे माध्यम से कार्य करता है।

जकर्याह 4:6–7

6 तब उसने मुझे उत्तर देकर कहा, "जरुब्बाबेल के लिए यहोवा का वचन यह है: 'न तो बल से और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा,' सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

7 'हे बड़े पहाड़, तू क्या है? जरुब्बाबेल के सामने तू मैदान हो जाएगा! और वह जयजयकार के साथ इसकी कोने के पत्थर को निकालेगा, और पुकारेगा, 'अनुग्रह, अनुग्रह, इस पर!'"

लाठी या भाले पर नहीं, बल्कि पूरी तरह और केवल पवित्र आत्मा पर निर्भर रहें।